कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय .... इतिहास ....

परीक्षा का दिन .... शुक्रवार ....

दिनांक .... 15-03-2019 ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 165/2019

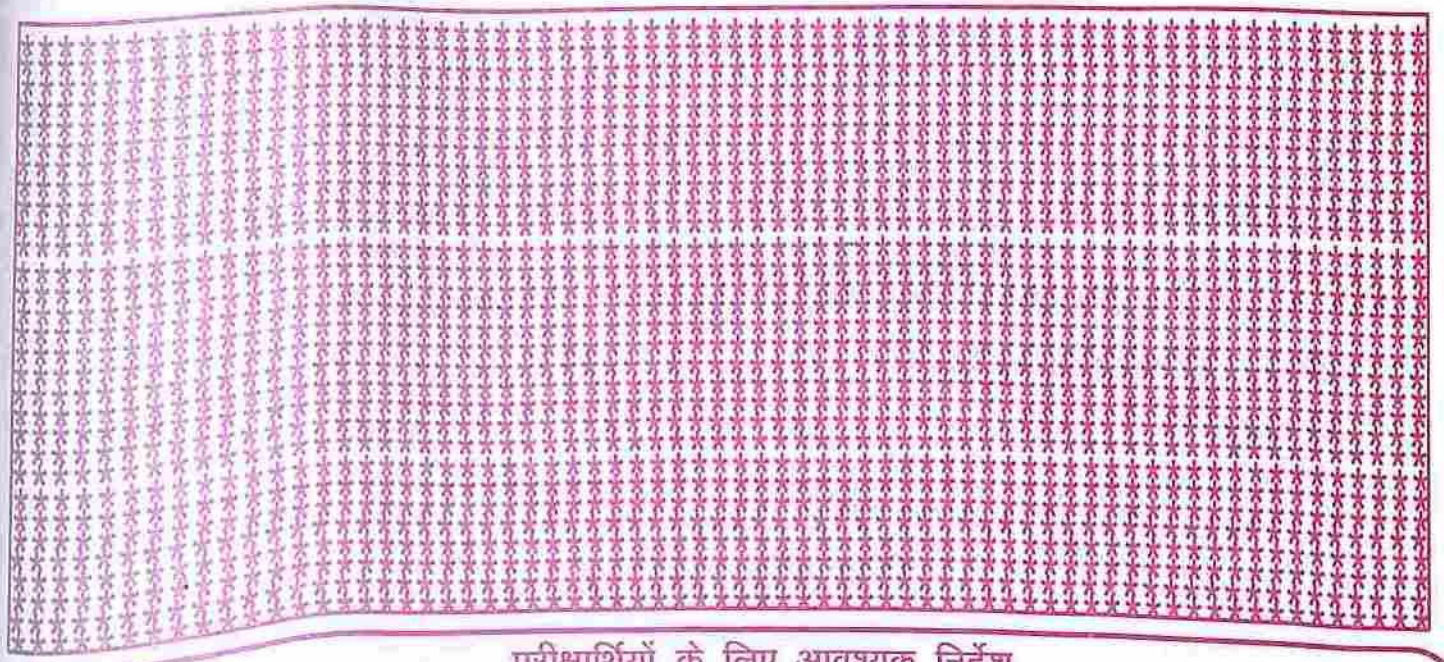

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहियें। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	प्र. 1	→
	Ans.	10 मण्डल ।
	प्र. 2	→
	Ans.	बाणभट्ट ।
	प्र. 3	→
	Ans	57 ई पूर्व ।
	प्र. 4	→
	Ans	पाली भाषा का ।
	प्र. 8	→
	Ans.	शिव नेर की पहाडी किले मे ।
	प्र. 7	→
	Ans.	चक्रवर्दाई ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 13 →

Ans.

रचनाए = रचनाकार

(i) इंडिका = मेगस्थनीज

(ii) मृच्छकटिकम = शुद्रक

(iii) पंचतंत्र = विष्णुशर्मा

(iv) राजतरंगिणी = कल्हण

प्र. 14 →

Ans.

पुराणो की संख्या 18 है

सबसे प्राचीन पुराण - मत्स्य पुराण है।

प्र. 15 →

Ans.

मुगलो द्वारा प्रताप की सेना का पीछा न करने का कारण -

(1) मुगल सेना की युद्ध न करने की इच्छा।

(2) उन्हें भय था कि महाराणा प्रताप पहले से पहाडो मे जाल बिछाया हुआ है। राजपूत सेना का गुरिल्लायुद्ध मे निपुण न होना।

प्र. 16 →

Ans.

1857 की क्रान्ति का तात्कालीक कारण मुख्य रूप से अंग्रेजो द्वारा नई रायफल्स बन्दूक

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		की मे गाय व सूअर की चर्बी का प्रयोग करना ।
प्र.9	9	→
Ans.		गाजी की उपाधि धारण की ।
प्र.6	6	→
Ans.		बौद्ध धर्म मे उपजे विवाद को शान्त करने के चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया ।
प्र.10	10	→
Ans.		विजयस्तम्भ मे हिन्दु - देवी - देवीताओ की हजारों मूर्तियां होने के कारण इसे भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष कहा जाता है ।
प्र.	5	→
Ans.		गान्धार शैली मे विषय भारतीय और शैली ग्रीक देश की इसमे भगवान बुद्ध की प्रतिमाए पाश्चात्य शैली मे बनी थी । यूनानी देवताओ की मूर्ति का समावेश किया गया ।

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	
प्र.	11	→ वेदों को समझने के लिए वेदांगो की रचना की।
Ans		

प्र. 29 →

Ans. स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक व उनके राजनीतिक व धार्मिक विचार निम्नलिखित हैं

(i) स्वामी दयानंद सरस्वती का परिचय ⇒ स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 1824 में मोरवी के पास टंकारा मे ब्राह्मण परिवार मे हुआ था इनका बचपन का नाम मुलशंकर था इन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। इन्होंने आई. सी. एस की परीक्षा उतीर्ण की लेकिन इन्होंने आई. सी. एस की नौकरी छोड दी और समाज की सेवा की।

(ii) सामाजिक सुधार ⇒ स्वामी दयानंद सरस्वती बहुत बड़े समाज सुधारक है इन्होंने समाज मे हो रहे भेदभाव का विरोध किया इन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया इन्होंने बाल-विवाह, बहुप्रथा, बहुदेववाद, सतीप्रथा आदि का विरोध किया इन्होंने स्त्री को आगे बढ़ने का दर्जा दिया इन्होंने समाज मे स्त्रियो के लिए अनेक विद्यालय खोले स्त्रियो को अनेक सुविधाए दिलाई। इन्होंने छुआ-छूत का

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

विरोध किया और समाज में अनेक कुप्रथाओं का विरोध किया।

(iii) धार्मिक सुधार ⇒ स्वामी दयानंद सरस्वती ने लोगों को एक-दूसरे के साथ रहने पर जोर दिया उन्होंने समाज में किसी भी जीव पर की दया नहीं करने पर जोर दिया उन्होंने समाज में सभी लोगों को बराबर का सम्मान मिलने पर जोर दिया उन्होंने किसी भी मनुष्य का बुरा नहीं सोचने पर जोर दिया।

(iv) राजनीतिक विचार ⇒ स्वामी दयानंद सरस्वती ने इस बात पर जोर दिया कि राजा के लिए सभी लोग सम्मान दिए होने चाहिए सभी को न्याय मिलना चाहिए राजा को जनता की सुख-दुःख की व्यवस्था करनी चाहिए गरीबों को दान दिया जाना चाहिए सभी को कर से मुक्त रखना चाहिए राज्य में सभी को कुछ कहने का दर्जा दिया जाना चाहिए सभी लोगों को राज्य में ऊंच-नीच का भेद-भाव नहीं करना आदि।

(v) आर्थिक सुधार ⇒ सभी किसानों से भूमि को नहीं छीनना व किसानों से कर नहीं लेना आदि स्वामी दयानंद सरस्वती ने समाज में बहुत सुधार किये

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 14 →

Ans. रुद्रदामन ने जूनागढ़ अभिलेख का निर्माण कराया था जो सबसे बड़ा अभिलेख है और इसकी भाषा संस्कृत है।

प्र. 17 →

Ans. (1) मराठा और (2) केसरी।

प्र. 18 →

Ans. (1) बिजयसिंह पथिक (2) साधु सीताराम।

प्र. 22 →

Ans. अलाउद्दीन खिलजी के रणथम्भौर पर आक्रमण करने का कारण—

(1) - अलाउद्दीन खिलजी का महत्वकांक्षी स्वभाव।

(2) - अलाउद्दीन खिलजी के विरोधियों को रणथम्भौर में शरण देना।

(3) - अलाउद्दीन का विश्वविजेता होने की लालसा।

(4) - अलाउद्दीन के द्वारा रानी रत्नावली को प्राप्त करने के लालसा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 26 →

Ans. सीकर के राजा मानसिंह द्वारा महिलाओ के साथ अत्याचार, किसानो पर अधिक कर लगाना किसानो की जनसभा पर गोलिया चलवाना राजा के द्वारा किसानो की मांगो को मानना। इसलिए सीकर के किसानो ने आंदोलन किया।

प्र. 28 28 →

Ans. अशोक के धम्म व उसकी जनकल्याणकारी अवधारणा -

अशोक का धम्म = विभिन्न वर्गो जातियो को एक सूत्र मे बाधने के लिए औ अशोक ने आचार संहिता की रचना की जिसे अभिलेखो मे धम्म कहते है धम्म से अशोक के बारे मे जानकारी मिलती है।

अशोक के धम्म के प्रमुख सिद्धान्त
(I) अहिंसा (II) सहिष्णुता (iii) आडम्बरहिनिता
(iv) लोककल्याण (V) उत्तम गुणो को ग्रहण करना (VI) युद्ध का त्याग करना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(i) अहिंसा ⇒ अशोक ने यह बात पर जोर दिया की हमें कभी किसी जीव से हिंसा नही करनी चाहिए। सभी से प्यार प्रेम रखना चाहिए।

(ii) सहिष्णुता ⇒ अशोक ने कहा कि हमें सभी से प्रेम ~~प्यार~~ का व्यवहार रखना चाहिए सभी के प्रति आदर होना चाहिए सभी को एक दूसरे का भला करना चाहिए।

(iii) आडम्बरहीनता ⇒ लोगो को किसी से ईर्ष्या नही रखनी चाहिए किसी का बुरा नही सोचना चाहिए सभी के प्रति आदर करने के लिए वफादार रहना चाहिए।

(iv) लोककल्याण ⇒ हमें सभी के लिए भला सोचना चाहिए अशोक ने लोगो के लिए कुए, सडक, खाना-पीना आदि की व्यवस्था की थी लोगो के भला के लिए काम करा।

(v) उत्तम गुणो को ग्रहण करना ⇒ अशोक ने सभी लोगो को यह समझने पर जोर दिया की हमें उच्च गुणो को ग्रहण करना चाहिए दूसरे के बुरे गुणो को ग्रहण नही ग्रहण करना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

चाहिए हमे हमारे माता-पिता, गुरुजनों के, व ऋषियों के बातों को ग्रहण करना चाहिए।

(vi) युद्ध का त्याग करना ⇒ अशोक ने युद्ध का भी त्याग कर दिया था युद्ध मे बहुत सारे लोग मरते है खुन बहते है तो अशोक को बहुत दुःख होता है तो उन्होंने युद्ध का भी त्याग कर दिया था।

अशोक की जनकल्याणकारी अवधारणा – अशोक ने लोगो के प्रति व्यवहार रखते थे उन्होंने लोगों की भलाई के लिए कुएं, हैंडपम्प, नहरे आदि की व्यवस्था की गई थी इन्होंने लोगो को सरकार से कर से मुक्त करा रखा था गरीब किसानों के लिए अनाज की व्यवस्था भी करवाई सडके बनवाई थी गरीबो को रोजगार भी दिलाया था उन्हे किसी भी पर अत्याचार करने पर प्रतिबंधित किया गया था इन्होंने लोगों पानी की व्यवस्था करवाई गयी थी इन्होंने लोगो को राज्य मे बराबर का सम्मान दिया था जाती छुआ-छूत को दूर किया था एक-दूसरे से प्रेम रखने के लिए कहा था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
19 / पू.	19	→

इस सभ्यता के आन्तरिक व विदेशी व्यापार निम्नप्रकार से है-

Ans (I) सिन्धु घाटी सभ्यता सिन्धु नदी पर स्थित होने के कारण नदी के माध्यम से इसका व्यापार आन्तरिक ही नही दूसरी सभ्यताओं के साथ भी था जिसका प्रमाण मसो मेसोपोटामीया उनमोहे

(II) से सिन्धु घाटी सभ्यता के बडे चार महान नगर समुद्र किनारे है जिनमे लोथल, धोलावार, मोहनजोदडो हड़प्पा हड़पा जहां से आन्तरिक और विदेशी व्यापार होता था इन स्थानों से चावल, जौ, अनाज के तथ्यों के अलावा बड़े-बड़े अनाज के अन्नागार और बड़े-बड़े नौकायाई के प्रमाण मिले है

(III) ये सभ्यताएं एक-दूसरे पर व्यापारिक दृष्टि से निर्भर थे और कृषि प्रधान थे अनाजो का व्यापार विदेशी से करके जीवन-यापन हेतु आवश्यक वस्तुए प्राप्त करते है।

(iv)

Sl.No. : 019769

नामांक	Roll No.					
2	9	4	8	7	7	6

SS–13–Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2019

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2019

(30)

HISTORY

इतिहास

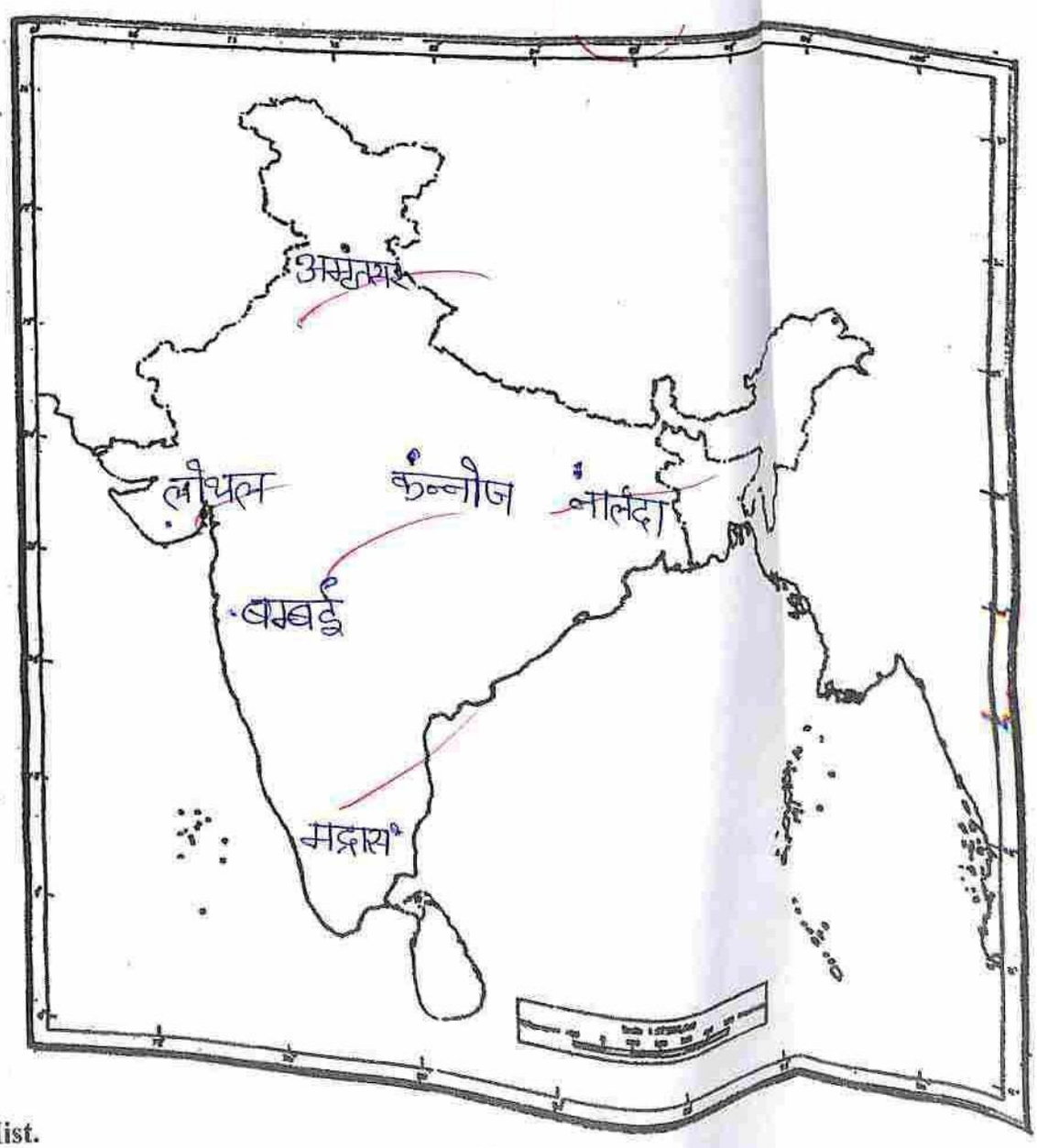

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 24 →

Ans. भारतीय इतिहास मे बक्सर के युद्ध मे ईस्ट इंडिया कम्पनी को एक शक्ति के रूप मे उभारा जिसको हम निम्नलिखित बिन्दुओ के आधार वर्णन किया है।

(1) मुगल शासक को हराना ⇒ अप्रैल 1764 मे हुए इस युद्ध मे ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पहली बार मुगल शासक को हराया।

(2) इस युद्ध के बाद ईस्ट भारत का पुर्णरूप से ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन हुआ।

(3) ईस्ट भारत पर स्वदेशी राजो को अधिकार समाप्त हुआ।

प्र. 27 →

Ans. राजस्थान मे राजनीतिक चेतना के प्रसार मे समाचार पत्रो व साहित्य का योगदान -

(1) समाचार पत्रो से लोगो को अपनी मातृभूमि के प्रति उत्साह उत्पन्न हुआ

(2) साहित्य के क्षेत्र मे बिजयसिंह पथिक ने भी बहुत योगदान दिया था

(3) इन्होने समाचार पत्र - पत्रिकाओ द्वारा लोगो को जागरूक किया।

(4) लोगो मे जोश उत्पन्न हुआ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. 20 →

Ans. प्रयाग भोक्ष परिषद राजा हर्ष के द्वारा 643 ईस्वी मे रेत के उपर गंगा और यमुना के समुद्र स्थल पर किया गया इसमे 5 लाख व्यक्ति इकट्ठे हुए

(i) पहले दिन प्रयाग मे बुद्ध की मुर्ति रखी गई थी जिसमे पूजा के दौरान वस्त्र और आभुषण को दान किया गया था।

(ii) दूसरे और तीसरे दिन शिव की उपासना की गई

(iii) चौथे दिन ब्राह्मणो को दान दिया व भोजन कराया गया था

(iv) यह सभा 75 दिन तक चली थी। चीनी यात्री ह्नेनसांग ने लिखा है कि इसमे राजा हर्षवर्धन का पास वर्षो मे इकट्ठा किया गया धन खर्च किया गया था।

→

प्र. 23

Ans यह सन्धि 1806 29 जनवरी 1799 मे मराठो और अंग्रेजो के बीच हुई।

(1) यह सन्धि अपमानजनक थी अंग्रेजो के लिए। क्योकि इसमे अंग्रेजो द्वारा विजित क्षेत्र पुनः मराठो को लौटा दिया जायेगा।

(2)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(3) हर्जाने के रूप में अंग्रेजों 41 हजार रुपये मराठों को देंगे।
(4) राघोबा को पेशवा को सौंप देंगे बड़ोच जिले की आय सिंधिया को दिए दि जायेगी
(5) बन्दर के रूप दो अंग्रेज अधिकारी भारमल और इस्टीवर्ल्ड मराठों के पास भेज देंगे।
इस प्रकार अंग्रेजों का सब कुछ छीन लिया गया था इसलिए यह सन्धि अंग्रेजों के लिए अपमान जनक थी।

प्र. 25 →

Ans. स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रीय दृष्टिकोण के प्रति है। क्योंकि -
स्वामी विवेकानंद का परिचय ⇒ स्वामी विवेकानंद का जन्म 1863 में कलकत्ता में हुआ था इनका बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था और इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था इन्होंने शिकांगो के विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लिया था इन्होंने राष्ट्रीय सम्मेलन में भी भाग लिया था इन्होंने समाज सुधार में भी बल दिया था ये लोगों का भला सोचते थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

स्वामी विवेकान्द का राष्ट्रीय के प्रति - इन्होंने लोगो के लिए भला सोचा है इन्होंने ने लोगो राष्ट्र के प्रति जागरूक किया एक दूसरे मे जोश उत्पन्न किया इन्होंने लोगो का एक दूसरे के प्रति प्रेम उत्पन्न किया सभी को भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए जोश उत्पन्न किया । स्वामी विवेकान्द ने लोगो के सामाजीक आर्थिक , धार्मिक जीवने मे सुधार भी किया किया था और स्त्री शिक्षा पर भी बल दिया था ।

→

प्र. 21 21

कनिष्क बौद्ध धर्म का महान सरक्षक संरक्षक था - क्योंकि

कनिष्क कुषाण वंश का संस्थापक था इन्होंने यूची जाति को पराजत किया और कं कनिष्क बौद्ध बौद्ध धर्म का महान संरक्षक था इन्होंने कनिष्कपुर नामक नगर मे (1) चतुर्थ बौद्ध संगति का आयोजन किया था जिसे बौद्ध ब्राह्मणो को दान दिया गया था ।

1108

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) चतुर्थ बौद्ध संगति में इन्होंने दो शाखाओं का निर्माण किया था।

(iii) हीनयान व महायान।

(iv) हीनयान में पाली भाषा का प्रयोग किया गया था जबकि महायान में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया था।

(v) हीनयान में बुद्ध की केवल गायन किया करते थे जबकि महायान में बुद्ध की पूजा की जाती थी

(v) हीनयान में मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करते थे जबकि महायान में मूर्तिपूजा में विश्वास करते थे।

इसलिए कनिष्क एक महान था

कार्य समाप्त

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

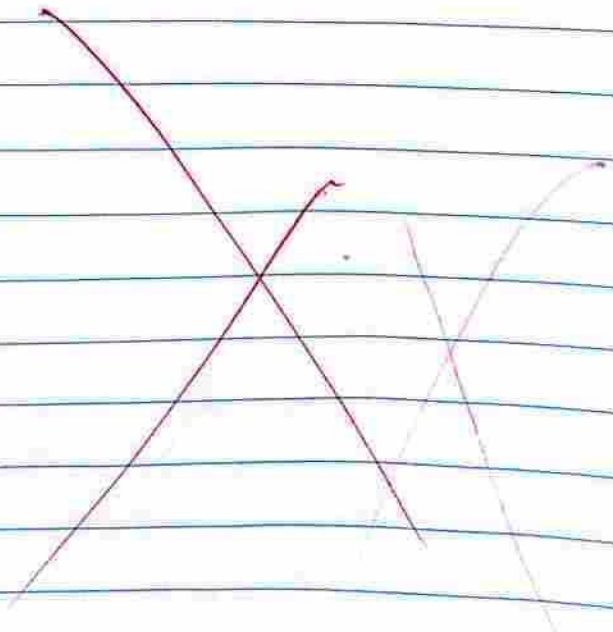

BSER-165/2019